अध्याय 1

प्रोत्साहन

अभिवादन (1:1, 2)

[1]पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम, जो हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है। [2]हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

आयतें 1, 2. अभिवादन की पहचान 1 थिस्सलुनीकियों के नाम से की जा सकती है, सिवाय इसके कि पौलुस ने यहाँ पर **पिता** (πατήρ, *पटेर*) के पहले **हमारे** (ἡμῶν, *हेमोन*) लगाया है (देखें चर्चा 1 थिस्सलुनीकियों 1:1 पर)। ए. टी. रॉबर्टसन ने लिखा, "यीशु मसीह को परमेश्वर की समानता में रखा गया है, यद्यपि पहचान अलग-अलग है।" रॉबर्टसन ने यह भी देखा कि सम्बन्ध सूचक शब्द ἀπό (*अपो*, **की ओर से**) जो 2 थिस्सलुनीकियों 1:2अ में दिखाई देता है, वह संकेत कर रहा है कि पिता और पुत्र अनुग्रह और शांति के स्रोत के मुख्य सोता हैं।"[1]

थिस्सलुनीकियों के धीरज के लिये धन्यवाद (1:3, 4)

[3]हे भाइयो, तुम्हारे विषय में हमें हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, और यह उचित भी है, इसलिये कि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता जाता है, और तुम सब का प्रेम आपस में बहुत ही बढ़ता जाता है। [4]यहाँ तक कि हम आप परमेश्वर की कलीसिया में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं कि जितने उपद्रव और क्लेश तुम सहते हो, उन सब में बढ़ तुम्हारा धीरज और विश्वास प्रगट होता है।

आयत 3. इस आयत में दो पत्रियों के बीच समानता पाई जाती है। 1 थिस्सलुनीकियों 1:2, 3, में पौलुस ने कहा, उनके लिये वह परमेश्वर का धन्यवाद करता था, यहाँ पर भी उसने वही किया है। इससे भी अधिक

1 थिस्सलुनीकियों 1:3 में विशेषकर, पौलुस ने उनके "विश्वास के प्रयत्नों," "प्रेम के समझ में बढ़ोत्तरी" और "आशा की स्थिरता" के बारे में कहा। यहाँ पर उसने कहा कि उनका, **विश्वास बहुत बढ़ता जाता है**, और उन सब का **प्रेम ... बढ़ता जाता है**, और उसने सुनिश्चित किया कि वे धीरज को प्रकट करते थे। इसलिये, आशा जो धीरज को बढ़ाती है अभी भी उनमें पाई जाती थी। हम देखते हैं कि वे बढ़ रहे और परिपक्व होते जा रहे थे। वास्तव में, वह यह कह रहा था कि, 1 थिस्सलुनीकियों 3:10–12 में उसकी प्रार्थना का उत्तर मिल चुका था। आगे, बातों को सामान्य रूप से लेते हुए उसने कहा कि यह प्रेम उन सब में पाया जाता है, वे भी जिन्हें पौलुस ने पहली पत्री में उनके व्यवहार के लिये डाँट लगाई थी। डाँटने का अर्थ त्यागना नहीं होता। किसी मनुष्य को पश्चाताप के लिये कई अलग-अलग तरीके से सचेत करने पर भी उसके बार-बार इनकार के बाद ही केवल संगति से अलग कर दिया जाता है (तीतुस 3:10, 11)।

पौलुस का अपने भाइयों के लिये प्रार्थना करने के कर्तव्य की भावना पर ध्यान देना भी जरूरी है : **हमें हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए।** उसने एक शब्द का प्रयोग किया जो कर्तव्य की ओर संकेत करता है। "हमें चाहिए," ὀφείλω (*ओफेइलो*), से जैसे कि "किसी का कर्जदार होना लूका 7:41; कर्तव्य के आधीन निश्चय की वस्तुओं को करने के लिये।"[2] पौलुस परमेश्वर की स्तुति करने के लिये बाध्य था, थिस्सलुनीकियों और उनके विश्वास और प्रेम के बढ़ने के लिये धन्यवाद करता है।

निश्चय ही यह प्रेम की विवशता थी, जिसने पौलुस को कर्तव्यपरायण के लिये बाध्य किया (2 कुरिन्थियों 5:14)। जब हमारा प्रेम भी इसी के समान होता है, हम भी इसी प्रकार बाध्य होते हैं।

आयत 4. जिस प्रकार पौलुस ने अपने आस पास के भाइयों के साथ सम्पर्क बनाए रखा – कुरिन्थियों और आस पास की जगह जहाँ वह सेवकाई करता था – वह दूसरों से कहता था कि वह थिस्सलुनीकियों पर कितना घमण्ड करता था : **हम ... परमेश्वर की कलीसिया में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं।** वह सम्भवतः उन्हें समय के अनुसार लोगों से बराबरी करते हुए योग्य होने का संकेत दे रहा था। "गर्व से कहने" या "घमण्ड करने" का अनुवाद ἐγκαυχάομαι (*एग्काउचाओमाई*), से किया गया है जिसका प्रयोग केवल नए नियम में किया जाता है। यह "दो वाक्यांशों *एन* (में) पहला वाला घमण्ड करने के उद्देश्य की विशेषता और दूसरा घमण्ड करने के स्थान पर जोर डालता है।"[3] रॉबर्ट एल. थॉमस ने थिस्सलुनीकियों को कारण और दूसरी कलीसियाएँ/सभाएँ वे स्थान माने जहाँ पर घमण्ड किया जाता था।

थिस्सलुनीकियों का विशेष स्वभाव जिसके बारे में वह घमण्ड करता था, वे थे उनका **धीरज** – क्रियाशील और साहस के साथ बढ़ते रहना – उनका **विश्वास** – परमेश्वर पर भरोसा और निर्भरता – जो उन्होंने **सताव और क्लेश**

के बीच में दिखाया (देखें 1:6)। 1 थिस्सलुनीकियों 2:14 ने संकेत दिया कि उन्होंने "अपने ही लोगों" के हाथों दुःख उठाया, परन्तु हम जानते हैं कि उन पर सबसे पहले सताव यहूदियों के द्वारा आया (देखें प्रेरितों 17:1–9)। स्पष्ट है कि इस आयत में अनुवाद सहते रहना में क्रिया से काल का प्रयोग किया गया है, जिससे पता चलता है कि वे पौलुस के इस पत्री को लिखे जाने के दिन तक उपद्रव सह रहे थे। इस कारण, व्याख्या की गई कि उपद्रव के बाद भी वे साहस के साथ आगे बढ़ते रहे।

पौलुस कभी भी विश्वास में आए अपने लोगों की समस्याओं पर जिनमें परिवर्तन लाना जरूरी होता था ध्यान देने से पहले, उनके जीवन के सारे सकारात्मक पहलूओं की प्रशंसा करने का अवसर कभी नहीं खोता था। इसलिये, उसके सुधार को मानने का अवसर (2:1–3; 3:6–15) और अधिक बढ़ जाता था।

पौलुस ने बहुत सी सभाओं को "परमेश्वर की कलीसियाएँ" (या "परमेश्वर की कलीसिया"; NIV) कहा। वह कुरिन्थुस, एथेन, बिरिया और दूसरी सभाओं का वर्णन कर रहा था, परन्तु ऐसा नाम देना उचित नाम नहीं था। अधिकतर अनुवादों में चर्चेस शब्द के पहले अक्षर में अंग्रेजी का बड़ा अक्षर नहीं पाया गया है। जबकि, यह वाक्यांश वर्णनीय है, जो अधिकार को दर्शाता है : कि वे परमेश्वर के लोग थे। यही बात "मसीह की कलीसियाओं (churches of Christ)" के लिये भी सही है जिस प्रकार रोमियों 16:16 में इसका प्रयोग किया गया है। दोनों ही परमेश्वर के लोगों की सभाओं का वर्णन करने का बाइबलीय तरीके हैं।

परमेश्वर का सच्चा न्याय और मसीह का दूसरा आगमन (1:5–10)

5यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट प्रमाण है कि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहरो, जिसके लिये तुम दुःख भी उठाते हो 6क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे। 7और तुम्हें, जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जब कि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, 8और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। 9वे प्रभु के सामने से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे। 10यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा; क्योंकि तुम ने हमारी गवाही पर विश्वास किया।

आयत 5. पौलुस ने कहा कि "सताव और दुःख" जो थिस्सलुनीकियों ने सहा वह परमेश्वर के **सच्चे न्याय का स्पष्ट प्रमाण** या संकेत था, और यह कि वे **परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहरें**। "सच्चा प्रमाण" यूनानी शब्द ἔνδειγμα (*एन्डेइग्मा*), से लिया गया है। जबकि नए नियम में ἔνδειγμα (*एन्डेइग्मा*) का केवल एक ही बार प्रयोग देखने को मिलता है, इसी से सम्बन्धित शब्द ἔνδειξις (*एन्डेइक्सिस*, "आगे दिखाना") का प्रयोग रोमियों 3:25, 26; 2 कुरिन्थियों 8:24; और फिलिप्पियों 1:28 में किया गया है।[4]

यह कहना कि वर्तमान सताव और क्लेश इस बात का संकेत है कि वह व्यक्ति अंततः बचाया जाएगा, अविश्वासी व्यक्ति के लिए अजीब सा लगता है। वह दावा करता है कि, "क्या आपका तात्पर्य है कि सताव अब न्याय के दिन में स्वर्ग में ग्रहण किए जाने की गारंटी देता है?" इसका उत्तर हाँ है। मुख्य रूप से, पौलुस का कहना यही था।

मसीह "के कारण" सताव और अपमान परमेश्वर की आशीष का चिन्ह है (मत्ती 5:11, 12)। जब ये बातें सत्य हैं, वे इस बात का प्रमाण हैं कि मसीहियों के लिये "स्वर्ग में एक बड़ा प्रतिफल" रखा हुआ है (मत्ती 5:12)। यह सच्चाई केवल तभी प्रमाणित होती है जब हम परीक्षाओं *में दृढ़ बने रहते हैं,* जिस प्रकार थिस्सलुनीकियों ने किया।

1 थिस्सलुनीकियों 3:3 और 2 तीमुथियुस 3:12 बताते हैं कि ऐसे सताव – कभी-कभी शारीरिक, कभी-कभी मानसिक रूप से – मसीहियों के जीवन में दिखाई देते हैं। पौलुस ने यह भी कहा कि इसी रीति से, ये क्लेश हमें मसीह के निकट लाते हैं, जिसने दुःख उठाया (कुलुस्सियों 1:24)। निश्चय ही ऐसा नहीं है कि दुःख उठाना, क्रूस पर मसीह द्वारा किए गए प्रायश्चित से उद्धार का पूरक है, परन्तु यह कि जब मसीह की देह के अंग दुःख उठाते हैं तो वह भी दुःख उठाता है। दुःख जो उसकी देह या कलीसिया के लोग उठाते हैं, वह "मसीह के दुःख" का एक भाग है, जो अन्तिम न्याय के दिन में अपने लोगों को उद्धार देता है।

पौलुस ने इस भाग में कहा कि थिस्सलुनीके की कलीसिया ने परमेश्वर के राज्य के लिये दुःख उठाया इसलिये कि सभी सन्तों के अन्तिम सभा में वे एकसाथ उससे मिल सके। इसके अतिरिक्त पौलुस ने कहा कि क्लेश से धीरज और धीरज से खराई उत्पन्न होती है (रोमियों 5:3, 4)। पतरस ने कहा यह हमें निखरता और तैयार करता है (1 पतरस 1:6, 7)।

पौलुस ने कहा कि यदि थिस्सलुनीके के लोग विश्वासयोग्य बने रहे, जैसा कि वे पहले थे, तो वे उस स्वर्गीय घराने के योग्य गिने जाएँगे। यह सच्चाई कि परमेश्वर हमें कठिन परीक्षाओं से उबारता है जो उसके सच्चाई से न्याय करने का प्रमाण है, कि इस युद्ध में वह हमारी ओर है, और जब वह आएगा तब इन बातों का लेखा लेगा। अन्याय का राज्य सदा नहीं रहेगा (आयत 6, 7;

सभोपदेशक 3:16, 17)। परमेश्वर का राज्य इस पृथ्वी पर पहले ही से प्रगट है, कलीसिया (मत्ती 3:2), परन्तु इसका सम्पूर्ण अनुभव तब होगा जब मसीह के शत्रुओं पर जय प्राप्त की जाएगी (1 कुरिन्थियों 15:26) और सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर अविनाशी और सम्पूर्ण राज्य पर राज्य करेगा। अविनाशी राज्य (जिसकी चर्चा यहाँ पर की गई है) सम्पूर्ण अनुभव केवल मसीह के द्वितीय आगमन और न्याय के पश्चात् किया जाएगा (आयत 6, 7)।

हो सकता है हम क्लेश में आनन्द की इस भावना को देशभक्ति की भावना रखने वाले युवक के बारे में विचार करते हुए पकड़े रह सकते हैं, जब 1940 का दशक "युद्ध की तैयारी में सहायता करने" के नाम से प्रचलित था, तब उसे उसकी सेवाओं में कार्यरत रहने से अलग कर दिया गया जिसका उसे बड़ा दुःख हुआ होगा, परन्तु अपने देश की सेवा और "अपने देश के लिये" वीरगति को प्राप्त करने के योग्य समझा जाना उसके लिये "आनन्द की बात रही" होगी। मसीही लोग युद्ध भूमि में हैं, और सच्चाई यह है कि हम कठिनाइयों से होकर चलते हैं जिसका तात्पर्य है कि हमारा सेना प्रमुख, मसीह, हमारे साथ है और हमारी रक्षा करता है। उसके सैन्य बल में कार्य करना और ऐसे महान कार्य के लिये दुःख उठाना बहुमूल्य योगदान है।

आयत 6. निष्कर्ष यह है कि परमेश्वर **न्यायी** है और इसी कारण उसके लिये सच है कि वह न्याय प्रदान करे। न्यायी होने का अर्थ लोगों को वह देना है जिसके वे योग्य या अधिकारी हों। न्यायी मनुष्य अपने वचन की रखवाली नकारात्मक और सकारात्मक दोनों प्रकार से करता है। परमेश्वर भी अपने वचन की रखवाली एक न्यायी मनुष्य के समान करता है। इसलिये, उसने वायदा किया (रोमियों 12:19), कि आज्ञा न मानने वालों को वह दण्ड देता है। यह सोचना बड़ी भूल होगी कि परमेश्वर ऐसे पाप का दण्ड नहीं देगा, जिसके लिये कोई पश्चाताप व्यक्त न किया गया हो (तुलना करें रोमियों 11:22 से)।

पुस्तकों के आधार पर एक दिन न्याय किया जाएगा, और जब अन्तिम न्याय का समय आएगा, तो जो थिस्सलुनीकियों और दूसरे मसीहियों को **क्लेश देते [थे], वह उन्हें बदले में क्लेश देगा**। जो लोग थिस्सलुनीकियों को क्लेश देते थे उनके साथ उनका अपना क्लेश बहुत भारी होगा जिसे पिता स्वयं उनपर लाएगा। उन्हें "अनन्त विनाश" का दण्ड दिया जाएगा (आयत 9)। यूनानी शब्द ἀνταποδίδωμι (*अन्तापोडिडोमी*) का अर्थ "के बदले" या शाब्दिक अर्थ "वापस देना" होता है। डेविड जे. विलियम्स ने कहा, "यह एक शाब्दिक रूप है ... और कोई प्रश्न नहीं उठता कि परमेश्वर का न्याय क्लेश उत्पन्न करने वाले के लिये दण्ड और बदले के साथ, दुःख से मुक्ति देने के साथ और प्रतिफल दिए जाने के रूप में सोचा जाता है।"[5]

परमेश्वर का न्यायी होना माँगता है कि वह उन्हें दण्ड दे जो अन्याय से चलते हैं। इस नियम में केवल एक अपवाद है : मसीही जिनके अन्याय का दण्ड

पहले से ही मसीह के द्वारा सह लिया गया है (1 पतरस 2:23, 24)।

आयत 7. जब परमेश्वर आज्ञा न मानने वाले से "दुःख का बदला" लेगा, और उसके ठीक विपरीत वह थिस्सलुनीके के मसीहियों के लिये करेगा जो आज्ञा न मानने वालों के कारण दुःख उठाते (सताव का सामना करते) थे। सारणियाँ बदल या पलट दी जाएँगी, और वह (मसीहियों) को **चैन** देगा (2 कुरिन्थियों 2:13 से तुलना)। "चैन" के लिये यूनानी शब्द ἄνεσις (*अनेसिस*) का अर्थ विश्राम या चैन; चिन्ता, तनाव या क्लेश से मुक्ति मिलती है। पौलुस ने कहा कि, **हमारे साथ चैन** दिया जाएगा। "तात्पर्य है कि, पौलुस और उसके सहकर्मियों को दिया जाएगा। स्पष्ट संकेत है कि वे भी "दुःख" उठाएंगे। **प्रभु यीशु ... प्रगट** होगा तब ये सारी बातें घटेंगी या पूरी होंगी। वह अब, जो बातें स्वर्ग में गुप्त या छिपी हुई हैं, उनको फिर से अन्त के समय में उजागर या प्रगट करेगा। यह प्रकाशन, अवश्य ही, उसके द्वितीय आगमन को दर्शाता है। उसे अभी नहीं देखा जा सकता, परन्तु जब वह फिर से आएगा, "हर एक आँख उसको देखेगी" (प्रकाशितवाक्य 1:7)। इस विषय के बारे में 1 थिस्सलुनीकियों के हर एक अध्याय में बताया गया है और अब इस पत्री के पहले अध्याय में फिर से देखते हैं।

उसके आने से सम्बन्धित पौलुस ने तीन बातें बताई। पहला **स्वर्ग से** यीशु की ओर संकेत करता है जो बादलों पर प्रगट होगा (प्रेरितों 1:11; 1 थिस्सलुनीकियों 1:10)। दूसरा, मसीह स्वर्ग से **धधकती हुई आग** में प्रगट होगा (तुलना करें निर्गमन 3:2; यशायाह 66:15, 16; 2 पतरस 3:10 से)। "धधकती हुई आग" (πυρὶ φλογός, *पुरी फ्लोगोस*) आज्ञा न मानने वालों के लिये प्रताप और न्यायिक प्रतिफल का प्रतीक लगता है। यह शुद्धिकरण के प्रतीक से भी बढ़कर है। थॉमस ने लिखा, "यदि यह वाक्यांश में शुद्ध करने के प्रभाव पर अधिक जोर दिया गया था तो, इसका वास्तविक सम्बन्ध आयत 7 की अपेक्षा आयत 8 से होनी चाहिए।"[6] तीसरा, वह **अपने सामर्थी दूतों के साथ** आएगा। ये "पवित्र लोग" हैं जिसके विषय में पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों 3:13 और यहूदा 14 में बताया है। इस आयत में उसने इस सच्चाई का वर्णन किया है कि वे "सामर्थी" दूत थे। स्पष्ट है कि, उनके सामर्थी होने का स्रोत परमेश्वर ही है, जो उन्हें अपने सेवक या दूत के रूप में बलवन्त करता है।

इस दृश्य में देखेंगे कि यीशु अपने पवित्र और सामर्थी दूतों के साथ बादलों पर धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होने वाला है। यह एक स्मरणीय और प्रतापी घटना होगी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि थिस्सलुनीकियों की कलीसिया नहीं चाहती थी कि उनके प्रियजन इस अवसर को खो दें।

सच ही है कि कोई इस हवाले की तुलना 1 थिस्सलुनीकियों 4:16 से करता है कि पौलुस ने प्रभु की आज्ञा, "प्रधान दूत का शब्द" या "परमेश्वर की तुरही" का वर्णन नहीं किया है; परन्तु, जैसा कि वह पहले ही कह चुका है, इन

सब के शब्द भी सुने जाएंगे।

आयत 8. उसके द्वितीय आगमन पर, **यीशु पलटा लेगा**। वह "बदला" लेगा और वह "न्याय" करेगा। "पलटा" के लिये यूनानी शब्द ἐκδίκησις (*एकडिकेसिस)* है, जिसका अर्थ है "न्याय के साथ आगे बढ़ना; यह मनुष्य के समान पलटा लेना नहीं है ... जो अकसर हानि का होता है। इसमें बदला लेने की भावना जैसी कोई सोच नहीं पाई जाती है।"[7] *एकडिकेसिस* इसी का मूल अर्थ है जिसमें हम "न्याय" जैसे शब्द का पर्याय ढूंढते हैं। यहाँ पर न्याय ऐसा शब्द है जिसकी चर्चा इस सन्दर्भ में की गई है (देखें आयत 6)। यह सोच प्रतिशोध की भावना की नहीं है, बल्कि न्याय के प्रशासन का प्रकटीकरण है। लूका 18:3, 7 में भी इसी शब्द का प्रयोग किया गया है।

जब वह आएगा तो किस प्रकार के मनुष्यों को दण्ड देगा? **जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते हैं।** वाक्यांश "जो परमेश्वर को नहीं पहचानते" τοῖς μὴ εἰδόσιν θεὸν (*तोइस मे एइदोसिन थियोन*), उन लोगों के बारे में कहता है जो परमेश्वर के क्रोध का सामना करेंगे। रॉबर्टसन ने इस वाक्यांश को "पूर्ण भूतकाल कर्मवाचक कृदन्त एइदोस का सम्प्रदान कारक बहुवचन" बताया। उसने सोचा कि पौलुस के मन में मुख्यतः अन्यजाति लोगों की चिन्ता होती थी (1 थिस्सलुनीकियों 4:1–5), और दूसरे वाक्यांश में उनके विषय में कहता है "जो सुसमाचार को नहीं मानते" अर्थात् अविश्वासी यहूदियों के लिये कहा गया था।[8]

क्या रॉबर्टसन का कहना सही है कि एक गुट अन्यजातियों का है और दूसरा यहूदियों का? ऐसा हो सकता है, परन्तु हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते। बहुत से यहूदियों के बारे में भी कहा गया है कि वे नहीं "जानते [परमेश्वर को]" (यूहन्ना 8:55)। "उसे जानने" के लिये सही शब्दों में अर्थ है बचाया जाना (यूहन्ना 17:3)। परन्तु दूसरी रीति से देखें तो, अन्यजाति लोग कभी-कभी "आज्ञा न मानने वाले" कहलाते हैं (रोमियों 11:30)। इसलिये हम सुनिश्चित नहीं हो सकते कि पौलुस के मन में दो प्रकार के लोग थे। हो सकता है कि उसने समझाने के लिये उन सभी के लिये जो परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण आज्ञाकारिता नहीं दिखाते, यहूदी-समान समरूपता वाले दो प्रकार के वाक्यांश का प्रयोग किया हो। इस हवाले का अनुवाद इस प्रकार से किया जा सकता है "जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और उनसे भी जो हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते।" चाहे हम दो प्रकार के लोगों के विषय सोचते हों, परन्तु मुख्य बात यह है कि वे सभी जो इसके पात्र हैं उन्हें दण्ड दिया जाएगा।

आयत 9. दण्ड पाएँगे को उसी यूनानी शब्द के समान रूप से लिया गया है जिसकी चर्चा आयत 8 में की गई है, जो न्याय के पूर्ण प्रशासन का संकेत करता है। दूसरे शब्दों में पाप का दण्ड बिना मिले नहीं जाएगा (देखें इब्रानियों 2:1–4)। दण्ड का रूप क्या होगा? पौलुस ने कहा, यह **विनाश** को लाएगा

(ὄλεθρος, *ओलेथरोस*)। इस बिन्दु पर कुछ लोग, यहोवा विटनेस वाले कहते हैं इसका अर्थ वे सब जो आज्ञा न मानने वाले हैं वे इस रीति से नष्ट किये जाएँगे कि उनका अस्तित्व ही मिट जाएगा या उनका पूर्ण विनाश हो जाएगा। परन्तु, शब्द में ऐसा अर्थ नहीं है। जे. इ. फ्रेम ने कहा कि *ओलेथरोस* "पौलुस अधर्मियों के सम्पूर्ण विनाश के बारे में नहीं (क्योंकि मृत्यु के बाद भी उनका अस्तित्व रहेगा ...) परन्तु मसीह से उनके अलगाव के बारे में कह रहा है।"[9] इसकी तुलना *ओलेथरोस* से करते हैं जिसका प्रयोग पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 5:5 में किया है, जहाँ पर वह व्यभिचारी मनुष्य के प्रतिफल पर विचार करता है कि शरीर के "विनाश" के लिये शैतान को सौंपा जाए, ताकि उस की आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए। यदि पौलुस का कहना होता कि उसका शरीर "अस्तित्व से मिट जाएगा" तो उस मनुष्य को मरा हुआ होना चाहिए और पश्चाताप की किसी भी सम्भावना से और उसकी आत्मा प्रभु के दिन में उद्धार पाने से वंचित हो जानी चाहिए। पौलुस का स्पष्ट अर्थ था कि उसके शरीर में कुछ कमी रही होगी जिसके कारण पश्चाताप करना जरूरी होगा।

हम "विनाश" या "नाश किया गया" का अर्थ सम्पूर्ण विनाश के अतिरिक्त कई दूसरे भावों को प्रगट करने के लिये भी प्रयोग में ला सकते हैं। वास्तव में, जब हम कहते हैं कि एक दुर्घटना में कार "नष्ट हो गई" हमारा तात्पर्य यह नहीं होता कि कुछ भी नहीं बचा, यही सम्पूर्ण रीति से विनाश कहलाएगा। बल्कि, हमारा कहने का तात्पर्य है कि जो कुछ बच गया है उसका भी नाश हो चुका है, या इतना नाश हो चुका कि जिस कार्य के लिये इसे बनाया गया था उसका कोई उपयोग नहीं होगा। इस अनुच्छेद में "विनाश" से यही तात्पर्य है। पाप के द्वारा मनुष्य स्वयं का विनाश कर चुका है और परमेश्वर उसे बाध्य करते हुए दण्ड की ऐसी दशा में डालेगा जहाँ पर वह अनन्त काल के लिये पाया जाएगा (1 थिस्सलुनीकियों 5:3 पर चर्चा देखें)।

इस विनाश का उल्लेख **अनंत** (αἰώνιος, *ऐओनिओस*) के रूप में किया गया है। क्योंकि न्याय के पश्चात् समय "सदा" चलता रहेगा (1 थिस्सलुनीकियों 4:17), हम जानते हैं कि "विनाश" का कभी अन्त नहीं होने वाला है। अब, यदि यह विनाश सम्पूर्ण विनाश या अस्तित्व का अन्त करने वाला था तो मार्विन आर. विन्सेन्ट का कहना सही है कि इसकी विशेषता बताने के लिये "अनन्त" का प्रयोग नहीं किया जाएगा, क्योंकि अनन्त तक अस्तित्व का अन्त करने जैसी कोई बात ही नहीं हो सकती।[10]

निदान यह है कि, आज्ञा न मानने वाला अनंतकाल के लिये नाश की दशा में पाए जाते हैं। यह "अनन्त जीवन" का उल्टा है जिसके बारे में मत्ती 25:46 जैसे आयतों में बताया गया है। एक दशा आशीषों से भरे सुखद अस्तित्व की दशा के रूप में है जिसे "जीवन" कहलाने का अधिकार है। और दूसरा नाश के सम्पूर्ण विनाश की दशा में अस्तित्व का होना नहीं है, परन्तु ऐसे सम्पूर्ण विनाश

की दशा में अस्तित्व के पास जीवन कहलाने का कोई अधिकार नहीं है। यह अनंतकाल के किये बनाए गए सम्पूर्ण नाश या "विनाश" की दशा है।

यहाँ पर हम उसके आने पर आज्ञा न मानने वाले पर मसीह के दण्ड का दूसरा पहलू भी देखते हैं। इसमें उन्हें **प्रभु के सामने से दूर होना पड़ेगा**। उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में आने की मनाही होगी। मत्ती 7:23 और 25:41 में मसीह कहता है कि "मेरे पास से चले जाओ" जबकि मत्ती 8:12 में मसीह कहता है कि बलवा करने वाले "बाहर अन्धकार में डाल दिए जाएँगे।" जो सारी ज्योति और प्रेम का स्रोत है उसकी उपस्थिति से बाहर निकाला जाना – कितनी भयानक बात है। इसमें आश्चर्य नहीं है कि यह "रोने और दाँत पीसने" की जगह है (मत्ती 22:13)। इसके विपरीत 1 थिस्सलुनीकियों 4:17 में, वहाँ हम "सदा प्रभु के साथ" रहेंगे।

जो बाहर निकाले गए हैं उसकी शक्ति के तेज से वंचित रह जाएँगे (तुलना करें यशायाह 2:10–22)। आज्ञा मानने वाले न्याय के पश्चात् उसकी शक्ति के तेज और प्रताप का अनुभव और आनन्द ले पाएँगे, आज्ञा न मानने वाले इसे नहीं देख पाएँगे क्योंकि वे परमेश्वर की उपस्थिति से वंचित हो जाएँगे।

आयत 10. जिन घटनाओं की चर्चा आयत 8 और 9 **में** की गई है वे उस **दिन** – द्वितीय आगमन के दिन प्रगट होंगे, जिसे कहा जाता है "जब प्रभु यीशु प्रगट होंगे" (आयत 7)। जब वह आगमन का दिन आएगा, तो उसके दो उद्देश्य होंगे।

पहला, मसीह **अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने वाला है**। जैसा कि हमने आयत 7 के "धधकती आग" में देखा है, यीशु का प्रगट होना तेजोमय होगा (तुलना करें प्रेरितों 22:11 से), और यह आयत लिखता है कि उसके लोगों "में" उसका तेज दिखाई देगा। वे शक्ति और अच्छाई की प्रदर्शनी होंगे, जो अन्ततः वापस उस तेज को उस पर प्रकाशमान करता है (तुलना करें 8:17; फिलिप्पियों 3:21; 1 पतरस 2:9 से)।

यूनानी शब्द ἐνδοξάζω (*एन्दोक्साजो*) जिसका अर्थ "में महिमा पाने" और जो नए नियम में केवल यहीं आयत 12 में पाया जाता है। इस वाक्यांश में "अपने पवित्र लोगों में [*एन*]" सम्बन्ध सूचक शब्द को दोहराया गया है। यह असामान्य भाव इतने स्पष्ट रूप में यहाँ केवल नए नियम में दिखाई देता है। यह वर्णन करता है कि कैसे परमेश्वर के लोग उसके तेज को प्रगट करते हैं, क्योंकि वे "उसकी कारीगरी हैं, मसीह यीशु में रचे गए हैं" (इफिसियों 2:10)। परमेश्वर की रचना में, "कोई नहीं" "कोई" बन जाते हैं। वे क्या हैं सबको यह उस दिन मालूम होगा, "प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में हैं" (इफिसियों 3:10), और जो कुछ वे हैं उस दिन अपने सृष्टिकर्ता की महिमा के लिये वापस आ जाएँगे (गलातियों 1:24; 1 यूहन्ना 3:2)।[11]

दूसरा, "उस दिन" वह **सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण**

होगा। यह संकेत "विश्वास करनेवालों" के या मसीहियों के लिये है। जबकि आयत 9 में हम पढ़ते हैं विश्वास न करने वाले परमेश्वर की उपस्थिति से वंचित रह जाएँगे, "विश्वास करनेवाले" केवल उसकी महिमा को प्रगट नहीं करेंगे बल्कि उसकी उपस्थिति पर भी "आश्चर्य" करेंगे। उसकी उपस्थिति आशा से बढ़कर शक्तिशाली दिखाई देंगे इसलिये वे आश्चर्य और भय (ईश्वरीय) से भर जाएँगे। जो उसकी महिमा को प्रगट और उस पर आश्चर्य करेंगे उनके बीच थिस्सलुनीके के विश्वासी होंगे क्योंकि उन्होंने पौलुस की गवाही और प्रचार को ग्रहण किया (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)।

प्रार्थना (1:11, 12)

[11]इसी लिये हम सदा तुम्हारे लिये प्रार्थना भी करते हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे, और भलाई की हर एक इच्छा और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ्य सहित पूरा करे, [12]ताकि हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम में महिमा पाए, और तुम उस में।

आयत 11. पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के अन्तिम मेल मिलाप को सदा अपने मन में रखा, इसलिये वह और उसके सहकर्मी सदा उनके लिये प्रार्थना किया करते थे (तुलना करें 1 थिस्सलुनीकियों 3:10; कुलुस्सियों 1:9–12 से)। पौलुस प्रार्थना के प्रभाव पर सचमुच में विश्वास करता था। थिस्सलुनीकियों के लिये इस अवसर पर उसकी प्रार्थना थी **कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे।** "तुम्हारी बुलाहट" परमेश्वर के साथ मेलमिलाप के आमंत्रण को दर्शाता है (2 कुरिन्थियों 5:19), जो सुसमाचार सन्देश का भाग जानकर फैलाया जा रहा है (1 कुरिन्थियों 1:26)। "योग्य समझे" (आयत 5; देखें 1 थिस्सलुनीकियों 2:12) जाने का अर्थ है परमेश्वर के अनुग्रह से उसकी क्षमा का आनन्द मनाना, ताकि वह हमें योग्य समझता रहे तब भी जब हम पाप के अपराधी होते हैं। परन्तु, वह तब तक यह नहीं करेगा जब तक हम "जिस बुलाहट से बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल न चलें" (इफिसियों 4:1), जिसके लिये हमारे पापों का अंगीकार और उनके लिये पश्चाताप ज़रूरी है (1 यूहन्ना 1:8–10)। पौलुस यह भी प्रार्थना करता था कि परमेश्वर **भलाई की हर एक इच्छा और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ्य सहित पूरा करेगा।** वह प्रार्थना करता था कि उनकी "भलाई की हर एक इच्छा" उसकी "शक्ति" के द्वारा अनुभव किया जाए। "भलाई" आत्मा के फल का एक भाग है (गलातियों 5:22)। उसने एक बार फिर "विश्वास के काम" को बताया और फिर हमें स्मरण कराया गया कि सच्चा विश्वास भक्ति के कामों को उत्पन्न करेगा (1 थिस्सलुनीकियों

1:3)। "सामर्थ्य सहित" ἐν δυνάμει (*एन डूनामेइ*), से आता है और इसका अर्थ "सामर्थ्य में" होता है। इसकी तुलना पवित्र आत्मा के द्वारा (1 थिस्सलुनीकियों 1:5) "मसीह में" (1 कुरिन्थियों 1:24) परमेश्वर की सामर्थ्य से करनी चाहिए।[12]

आयत 12. जब मनुष्य प्रभु को ग्रहण करते और उसकी शिक्षाओं पर चलते हैं, तो उसका नाम उनमें महिमा पाता है (यूहन्ना 17:10; गलातियों 1:24)। और और दूसरी ओर, मसीह की महानता जो कि हमारा शिक्षक है हम जो उसके शिष्य (उसमें तुम) है महिमा दिलाता है। उसकी महानता के कारण महिमा हम तक आती है। केवल हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के द्वारा (और बिना पक्षपात के) यह सब कुछ सम्भव है।

अनुप्रयोग

इस अध्याय का मुख्य विषय "प्रोत्साहन" है। थिस्सलुनीके की कलीसिया क्लेश और सताव से जूझ रही थी और उसे ढाढ़स देने वाले शब्दों की जरूरत थी। जबकि उनमें से कुछ आश्चर्य कर रहे थे। "यदि हमने सच्चाई को ग्रहण किया है तो ये सब क्लेश क्यों हैं?"

पौलुस को थिस्सलुनीकियों की ओर से फिर से सन्देश मिला, जिससे वह जान पाया कि उसकी पहली पत्री को उन्होंने किस रीति से ग्रहण किया था। उसने जाना कि कलीसियाओं में उस समय भी क्लेश कितना बढ़ रहा था और अभी भी उन्हें द्वितीय आगमन के बारे में गलत जानकारी थी, और वे विश्वास और प्रेम में बढ़ते जा रहे थे।

इस पत्री में उसकी चिन्ता उनके बीच द्वितीय आगमन के विषय में उत्पन्न भ्रम को सही करना और मसीह में उनकी उन्नति के लिये उन्हें बलवन्त करना था।

परमेश्वर और मसीह की आशीषें (1:1, 2)

1 और 2 थिस्सलुनीकियों दोनों की पहचान की जा चुकी है कि ये पौलुस, सीलास और तीमुथियुस के द्वारा लिखे गए हैं। स्पष्ट है कि पौलुस इसका प्रमुख लेखक है। सीलास और तीमुथियुस का नाम इसलिये आया है क्योंकि वे उसके साथ थे और वे थिस्सलुनीकियों को अच्छी रीति से जानते थे।

पौलुस ने कहा, आशीषें परमेश्वर और मसीह की ओर से आती हैं। ये आशीषें हमारी सभी आत्मिक जरूरतों को पूरा करती हैं जो सदा हमारे पास रहेंगी।

ईश्वरीय प्रकाशन जो हमें मार्ग बताता है। जो ईश्वरीय प्रकाशन उनको मिल रहा था; उस परिस्थिति की माँग के अनुसार उनका मार्गदर्शन करने के लिये इस पत्री को भेजने के द्वारा वह उन्हें उसका अर्थ बताना चाहता था।

परमेश्वर, पौलुस के द्वारा उनको नए नियम के आदेश का एक भाग देना चाहता था।

ईश्वरीय अनुग्रह जो हमें तृप्त करता है। पौलुस ने कहा कि अनुग्रह परमेश्वर पिता और यीशु मसीह की ओर से आता है। वास्तव में, केवल परमेश्वर और मसीह हमें अनुग्रह दे सकते हैं जिसकी हमें जरूरत है। अनुग्रह एक देन है जिसके हम योग्य नहीं। उसके अनुग्रह के द्वारा हम हमारे पापों से बचाए गए, यद्यपि हमने न इसे कमाया या पात्रता रखते थे। उसके अनुग्रह के द्वारा, हम उद्धार के मार्ग में खड़े हैं, जबकि इसे पाने की योग्यता नहीं रखते। यह कितना प्रोत्साहित करने वाला विचार है!

ईश्वरीय शान्ति जो हमें शान्त करता है। पौलुस ने कहा कि शान्ति परमेश्वर पिता और यीशु मसीह से आती है। यह शान्ति परमेश्वर के अनुग्रह से प्राप्त होती है। हम परमेश्वर के अनुग्रह से बचाए गए हैं; जिसके परिणामस्वरूप; हमारे पास शान्ति है जो सुसमाचार की आज्ञाकारिता से आती है (रोमियों 5:1) और व्यावहारिक शान्ति जो प्रार्थना से आती है (फिलिप्पियों 4:6)।

हमें परमेश्वर से, हमारी शान्ति के लिये अनुग्रह और अपने व्याकुल मन के लिये शान्ति के सन्देश की आवश्यकता है। परमेश्वर और मसीह ने इन कमजोरियों को पूरा किया है और विश्वास के द्वारा हम उन्हें प्राप्त करते हैं और उन पर चलते हैं। EC

अधिक सराहनीय गुणों के लक्षण (1:3, 4)

यद्यपि इस पत्री की शुरुआत में पौलुस स्वयं के विषय में बताने के लिये समय व्यतीत नहीं करता है, जिस विषय पर वह थिस्सलुनीकियों साथ चर्चा करना चाहता है उसमें जाने से पहले वह उनकी प्रशंसा करने में समय व्यतीत करना चाहता है। थिस्सलुनीके के लोग पौलुस के मन में बसते हैं : वह कहता है, "हमें तुम्हारे विषय ... परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए" (आयत 3); "हम ... तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं" (आयत 4); और "हम सदा तुम्हारे लिये प्रार्थना भी करते हैं" (आयत 11)।

पौलुस ने इन शब्दों का प्रयोग किया, "तुम्हारे विषय में हमें हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए" (आयत 3), यह दिखाने के लिये कि उनकी आत्मिक स्थिति उसे प्रेरित करता था कि उनके लिये धन्यवाद करे। उसने आगे कहा, वह उनके लिये धन्यवाद करता था यह कहते हुए कि "यह उचित भी है।" यह वाक्यांश संकेत करता है कि जो धन्यवाद पौलुस उनके विषय कर रहा था, वह और कुछ नहीं पर उनके लिये यही करना उचित था।

वह थिस्सलुनीकियों के लिये धन्यवादी क्यों था? उसने उनमें विशेष गुणों के लक्षण देखा, जिन्हें हमें भी हमारे जीवन में देखने की आवश्यकता है।

विश्वास जो मजबूती से बढ़ने लगा। उनका विश्वास बहुत बढ़ चुका था (आयत 3)। यद्यपि वे सताव से घिर चुके थे, परन्तु वे परमेश्वर और मसीह के विश्वास में उन्नति के साथ बढ़ते रहे।

पहले पौलुस उनके विश्वास को लेकर चिन्तित था (1 थिस्सलुनीकियों 3:2, 5) और उसने अपनी पहली पत्री उनके विश्वास में जो कमी पाई जाती थी उसमें सिद्ध बनने में उनकी सहायता के लिये लिखा (1 थिस्सलुनीकियों 3:10)। अब, थोड़ा समय बीत जाने के बाद, वह धन्यवाद करने के योग्य था क्योंकि उनका विश्वास उसके आशा से आगे बढ़ चुका था। क्रिया "बहुत बढ़ता जाता है" एक मजबूत मिश्रित क्रिया है जो केवल यहाँ पर नए नियम में पाया जाता है, जो एक स्वस्थ पौधे के बढ़ने के समान क्रमिक बढ़ोतरी की ओर संकेत करता है।

प्रेम जो बढ़ता जाता है। उनका सब का प्रेम आपस में बहुत ही बढ़ता जाता था (आयत 3)। उनके लिये लिखे पिछले पत्री में उसने एक दूसरे प्रेम से करने के लिये कहा था, और अब इस पत्री में उसने उनके बढ़ने की प्रशंसा की।

प्रेम में उनका बढ़ना भी उसकी प्रार्थना का एक उत्तर था (1 थिस्सलुनीकियों 3:12)। प्रेम वह है जो प्रेम करने वाले में परमेश्वर की इच्छा को ढूंढ़ता है, और थिस्सलुनीकियों ने उस आत्मिक देह में हर एक के साथ ऐसा किया। "बढ़ना अच्छी आदत है" का इस आयत के पहले भाग में "बहुत बढ़ता जाता है" एक अलग अर्थ है। "बढ़ना अच्छी आदत है" का अर्थ "किसी के ऊपर फैल जाना" जैसे आग या बाढ़ अपने मार्ग में आने वाले सभी वस्तुओं के ऊपर से होकर गुजर जाता या फैल जाता है। उनका प्रेम उनके सभी भाइयों के ऊपर उमड़ने और छाने लगा।

स्थिरता जो धमकियों को नकारता है। उपद्रव और क्लेश में भी वे धीरज प्रगट करते थे (आयत 4)। जो सताव उनपर आए थे वे उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाए, उन्होंने हार नहीं मानी। वे उनका सामना करते गए।

पौलुस सभी कलीसियाओं में क्लेश के बीच में उनके विश्वासयोग्यता को देखने के कारण "गर्व के साथ" या "घमण्ड के साथ" बोलने के योग्य था। शब्द "घमण्ड" प्रबल मिश्रित शब्द है संकेत करता है कि यद्यपि ऐसा करना पौलुस की रीति नहीं थी, परन्तु थिस्सलुनीकियों की बात ही अलग थी जिसके कारण पौलुस यह करने को विवश था।

आयत 4 में "धीरज" यूनानी शब्द ὑπομονή (*हुपोमोने*) है। यह शब्द, सम्बन्ध सूचक "के नीचे" और क्रिया "बने रहना" का एक मिश्रित रूप है। शाब्दिक रूप से, शब्द बताता है कि "भारी उपद्रव के नीचे और विश्वासयोग्यता के नीचे सहते हो।" हमारे मन में यह एक गधे का चित्र बनाता है जो बोझ के नीचे दबा हुआ होता है परन्तु बोझ के नीचे मजबूत बना रहता है।

उपद्रव और क्लेश के बीच में क्या अन्तर है? उपद्रव कष्ट को कहते हैं,

विशेषकर मसीह में विश्वास करने के कारण अपने ऊपर आ जाते हैं। हमारे मसीह के लिये जीने के कारण ये शारीरिक और मानसिक पीड़ा को लाते हैं। "क्लेश" किसी भी प्रकार की समस्या जो जीवन में पीड़ा या दबाव लाता है, को व्यक्त करने का एक सामान्य कथन है।

थिस्सलुनीके की कलीसिया, एक कीमती फल के समान उपद्रव और क्लेश के दबाव में फँस गए। उन्होंने विश्वास का मीठा रस तैयार किया और प्रेम का सुगन्ध फैलाया। पौलुस ने अपने पत्री में, समस्या पर उतना अधिक ध्यान नहीं दिया जितना कि उसने विश्वास, प्रेम और धीरज के रस पर दिया, जो सभी दबाव से उत्पन्न हुए थे।

यदि आपने इस कलीसिया की स्थापना की होती, तो आपको उनके आत्मिक उन्नति के विषय पर भी चिन्ता अवश्य होती। आपके लिये वे विश्वास में बढ़ते जाते थे, आपस के प्रेम में बढ़ते जाते थे और उपद्रव में धीरज धरे हुए थे जैसे समाचार बहुत ही प्रोत्साहित करने वाले होंगे।

आइए, हम इसी प्रकार के विश्वासयोग्य मसीहियों को जिन्हें हम जानते हैं प्रोत्साहित करें। इसके अतिरिक्त, आइए, हम मानकर चलें कि हमारे जीवन में भी इसी प्रकार गुणों के लक्षण पाए। EC

धीरज : परमेश्वर का सच्चाई से न्याय का चिन्ह (1:4, 5)

अध्याय 1 में न्याय एक महत्त्वपूर्ण विषय है। आयत 4 और 5 में पौलुस ने लिखा कि दुःख उठाना "परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट प्रमाण है।" यह मत हमें भ्रमित कर सकता है। हम जोर देकर कहें, "ठहरो, पौलुस, क्या इससे तुम पीछे नहीं हटे? क्या इन सब परीक्षाओं से नहीं लगता कि परमेश्वर हमें भूल चुका है?" अवश्य ही, इसका उत्तर "नहीं" है!

पौलुस ने वही तर्क दिया जो उसके पहले मसीह ने दिया था। मसीह के कारण सताव परमेश्वर से आशीषित होने का एक चिन्ह है। यह नहीं कह सकते कि सभी परीक्षाएँ आशीष के कारण होते हैं। बल्कि यह कष्ट सहना मसीह के कारण है कि पौलुस और मसीह मन में थे। और यह भी, कि जब हम उन्हें सहते हैं केवल तभी वे आशीषें हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम "परमेश्वर के राज्य के योग्य" ठहरेंगे (आयत 5), या जैसा कि यीशु ने कहा, "तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है" (मत्ती 5:12)।

ये विचार यहाँ-और-अब के साथ तब-और-वहाँ के विपरीत है। यहाँ-और-अब के अनुसार, यीशु ने कहा, "दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे" (यूहन्ना 3:19)। इस संसार में मसीह ने विरोध का सामना किया, और मसीही भी विरोध का सामना करेंगे। मसीहियों को

विश्वासयोग्य, दूसरों की सम्पत्ति का आदर, लैंगिक सम्बन्धों में पवित्र, और लाभप्रद बातचीत बनाए रखने, अशोभनीय उपहास या बकवाद से बचे रहना ज़रूरी है। मसीही के रूप में, हमें समाज के रुचि के विरुद्ध जीना है, और इसी कारण हमारा जीवन तब-और-वहाँ की गवाही देता है।

तब-और-वहाँ, या स्वर्ग, जिसकी इच्छा हम रखते हैं। विश्वास के द्वारा हम जानते हैं कि, बातें बदल जाएँगी और स्वर्ग में हम विरोध को नहीं देख पाएँगे। हम अपनी स्वीकृति का आनन्द उठाएंगे और अपने घर में रहेंगे। हम "परमेश्वर के राज्य के योग्य समझे जाएँगे।"

क्योंकि हम जानते हैं कि हमारी आशा मसीह में है, जब हम उसके लिये दुःख उठाते हैं, तब हम इस बात का उल्टा परिणाम देखते हैं (आयत 6, 7; देखें लूका 16:25)। जो उपद्रव फैलाते हैं, जब तक वे पश्चाताप नहीं करते उन्हें न्याय का सामना करना पड़ेगा। जो लोग मसीह के कारण दुःख उठाते हैं स्वर्ग में उन्हें फल मिलेगा। स्वर्ग में वे शान्ति पाएँगे। EE

परमेश्वर की दृष्टिकोण से (1:5, 6)

एक कलीसिया भवन के सूचना पटल में लिखा था, "परमेश्वर की दृष्टिकोण से शिक्षा।" यहाँ, पौलुस ने सताव के बारे में कहा, जो वे सहते थे। आप कह सकते हैं कि उसने थिस्सलुनीकियों से कहा कि इन क्लेशों को "परमेश्वर के दृष्टिकोण" से देखें।

इसके बारे में वह क्या कहता है? जब हम सताव को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखते है, हम जो ऐसा दृष्टिकोण देखते हैं तो हमें इसे अपनाना चाहिए।

परमेश्वर सताव को आने देता है। "पौलुस ने कहा, सताव परमेश्वर का सच्चा न्याय है।" कैसे मसीही परीक्षाओं का सामना किए बिना बुराई की शक्तियों के विरुद्ध बड़ी लड़ाई लड़ सकते हैं? मसीही के चरित्र निर्माण किये जाने में सताव एक बना बनाया अनुभव होता है।

सताव चरित्र निर्माण का साधन है। एक प्रकार से, सताव का सामना करते हुए जीवन बिताना हमें परमेश्वर के राज्य के योग्य बनाता है। संघर्ष हमारे उद्देश्य में उन्नति का कारण होता है और उद्देश्य में उन्नति चरित्र निर्माण में बढ़ोतरी दिखाता है। पौलुस के कथन का अर्थ था कि क्लेश में धीरज धरना परिपक्वता की ओर ले जाता है।

हमारे दृष्टिकोण से, हर कीमत में कष्ट से बचना चाहते हैं। परन्तु, नए नियम के दृष्टिकोण से, मसीह के पीछे चलने के लिये चरित्र निर्माण की कीमत है। जिस सच्चाई से हम कष्ट सहते हैं, हम यीशु का अनुकरण करते हैं। जॉर्ज मैकडोनाल्ड (1824–1905) ने एक बार यीशु के कष्ट सहने के विषय में कहा, "वह अपने भाइयों के बीच में था जो कुछ उसके साथ हुआ होगा वही उसके

भाइयों के साथ भी।"[13]

जब सताव की बात आए तो परमेश्वर का अन्तिम शब्द होगा। आप निश्चित हो सकते हैं कि परमेश्वर उन्हें ज़रूर दण्ड देगा जो उसके लोगों के जीवन में क्लेश उत्पन्न करते हैं। परमेश्वर संसार पर अपना नियन्त्रण कभी नहीं खोता। अन्त में धार्मिकता की ही जीत होगी।

क्लेश कुछ कारण तक जीवन की सच्चाई है। परन्तु हम इसे किस दृष्टि से देखें? हम बोझ के हल्का होने के लिए प्रार्थना करते हैं या मजबूत कंधों के लिए? क्या परमेश्वर के सामने हम रोष के साथ आते हैं या आनन्द के साथ? यदि हम परमेश्वर के कष्ट सहने की दृष्टि अपनाते हैं तो हम देख पाते हैं कि यह एक विषम परिस्थिति है जो हमारे विश्वास को दृढ़ करता है। EC

उसके आने का अर्थ (1:5–10)

पौलुस मसीह की वापसी की चर्चा की ओर सताव के मुख्य विषय को उसके आगमन के साथ जोड़ते हुए आगे बढ़ा। यीशु का आगमन वह समय होगा जिसमें परमेश्वर अन्ततः उन लोगों का न्याय करेगा जो उसके लोगों का विरोध करते हैं।

नए नियम में मसीह का द्वितीय आगमन का तीन अलग-अलग संज्ञा के द्वारा वर्णन किया जाता है, जिसमें "अपोकलिप्स" (ἀποκάλυψις, *अपोकलुप्सिस*), "परुसिया" (παρουσία, *पैरोसिया*), और "एपीफेनी" (ἐπιφάνεια, *एपिफानिया*) शब्दों का अंग्रेजीकरण किया गया है। "अपोकलिप्स" का अर्थ गुप्त या छिपी हुई बातों से पर्दा हटाना या खोलना (1:7), "पैरुसिया" का अर्थ है "उपस्थिति में आना" (1 थिस्सलुनीकियों 2:19) और "एपीफेनी" का अर्थ है "प्रकटीकरण" (2 थिस्सलुनीकियों 2:8)।

आइए, हम उसके आगमन की बाट जोहें। यीशु का आगमन अपने साथ किन बातों को लाएगा?

विश्राम/चैन का समय। मसीह का आगमन उन लोगों के लिये विश्राम लाएगा जो उपद्रव सहते हैं। उसके आने पर, सब कष्ट एक बीती बात हो जाएगी और मसीह के साथ तेजोमय मिलन होगा।

"विश्राम" का यूनानी शब्द ἄνεσις (*अनेसिस*) है जिसका अर्थ है "तनाव से मुक्ति" या "दबाव का कम होना" जैसे किसी ने कसे हुए धनुष की रस्सी ढीली कर दी हो (देखें 2 कुरिन्थियों 2:13; 7:5; 8:13)।

प्रतिफल का समय। मसीह के आगमन से उन लोगों को प्रतिफल मिलेगा जिन्होंने प्रभु का इनकार किया। वे उसकी और उसके पीछे चलने वाले लोगों उपस्थिति से बाहर निकाल दिए जाएँगे। यह समय प्रभु का पलटा लेने का समय होगा।

उसके आने पर, प्रभु मानवजाति को दो गुटों में विभाजित करेगा : एक वे

लोग जो उसके आने पर शान्ति पाएँगे और दूसरे वे जो नाश किये जाएँगे। यीशु ने कहा कि सब जाति के लोग उसके सामने खड़े होंगे और वे खोए हुए और बचाए हुए लोगों में विभाजित किए जाएँगे (मत्ती 25:31–46)। EC

तब इस सच्चे न्याय की प्रभुता चलेगी (1:6, 7)

जब प्रभु आएगा, परमेश्वर का पलटा लेने का समय सामने आएगा। "जो क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश देगा ... और जो क्लेश पाते हैं ... चैन देगा" (आयत 6, 7)। यह समय कैसा होगा?

वहाँ पर एक प्रकाशन होगा। सब कुछ जो अभी छिपा हुआ है तब प्रगट हो जाएगा। यीशु को हम अभी नहीं देख सकते, परन्तु तब हम उसे देखेंगे।

यीशु स्वर्ग से प्रगट होगा (आयत 7अ)। जब यीशु स्वर्ग की ओर उठा लिया गया, तब चेले वहाँ खड़े अचम्भित थे। तब स्वर्गदूत कहने लगे, "हे गलीली पुरुषों, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा" (प्रेरितों 1:11)। 1 थिस्सलुनीकियों 1:10 में, पौलुस ने कलीसिया से कहा, "उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो।" जब मसीह आएगा, हम उसे स्वर्ग से नीचे आते देखेंगे।

यीशु "अपने सामर्थी दूतों के साथ" आएगा (आयत 7ब)। स्वर्गदूत "पवित्र लोग" होते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 3:13; देखें मरकुस 8:38)। पौलुस ने वर्णन किया कि स्वर्गदूत "सामर्थी" हैं। अवश्य ही सेना प्रधान मसीह, और सामर्थी स्वर्गदूतों के साथ, वह सेना अपराजेय होगी।

यीशु "धधकती हुई आग में" प्रगट होगा (आयत 7ब)। आग परमेश्वर की उपस्थिति साथ होने का कारण होता है। निर्गमन 3:2 में जब प्रभु मूसा के सामने प्रगट हुआ, तो एक कटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया। यशायाह 66:15 यहोवा का आग के साथ न्याय करने आना व्यक्त करता है : "क्योंकि देखो, यहोवा आग के साथ आएगा, और उसके रथ बवण्डर के समान होंगे, जिससे वह अपने क्रोध को जलजलाहट के साथ और अपनी चितौनी को भस्म करने वाली आग की लपट से प्रगट करे।"

आग दो विचारों को साकार करता है। पहला, यह महानता का प्रतीक है। यह राजाओं के साथ आता है। यह न्याय, बलवा के विरुद्ध न्याय के प्रतिफल का बोध कराता है। यशायाह में भी लिखा है, "क्योंकि यहोवा सब प्राणियों का न्याय आग से करेगा।" मलाकी 3:2 में भी, यहोवा की तुलना सोनार से की गई है जो आग से धातु को शुद्ध करता है। शुद्ध करने वाला आग मैल को मिटाता है।

वह दिन निकट आ रहा है जब यीशु फिर से आएगा। वह अपने स्वर्गदूतों

के साथ नीचे आएगा और अपना सच्चा न्याय प्रगट करेगा। परमेश्वर का सच्चा न्याय उन लोगों के लिये तेजोमय दिन होगा जिन्होंने भक्ति का जीवन बिताया है। जिन्होंने मसीह के कारण दुःख उठाया उनको उनका प्रतिफल स्वर्ग में मिलेगा। इसलिये, जिन्होंने परमेश्वर के लोगों को दुःख दिए वे शुद्ध करने वाले के प्रचण्ड आग का अनुभव करेंगे। जब यीशु फिर से आएगा, वह हममें क्या पाएगा? क्या वह हमें अपना प्रतिफल देगा या हम परमेश्वर के भयानक क्रोध का अनुभव करेंगे? EE

जब यीशु आएगा (1:5–10)

इस रीति से पौलुस ने इन सताए हुए मसीहियों को मसीह के द्वितीय आगमन के सुसमाचार से प्रोत्साहित किया, उसने नए नियम में मसीह के आने का सुस्पष्ट चित्रण प्रस्तुत किया। उसने उसके आने का वर्णन उसके दूतों, स्थान जहाँ से वह आएगा और उसके चारों ओर जो प्रतिक्रियाएँ होंगी उसके आधार पर किया। पौलुस ने कहा उसका आना एक प्रकाशन होगा, जो बातें गुप्त में थी खुल जाएँगी। यह एक खुलासा या प्रकटीकरण होगा।

यह अनुच्छेद हमारे मन में एक चित्र बनाता है कि उसका आना किस रीति से होगा।

वह स्वर्ग से ... आएगा। यह यीशु, स्वर्ग का परमेश्वर है जो आने वाला है। पृथ्वी पर उसकी सेवकाई के अन्त में, वह स्वर्ग में उठा लिया गया (प्रेरितों 1:11), और मसीही युग के अन्त में वह स्वर्ग से पृथ्वी पर वापस आएगा। जो आने वाला है यह वही है जो परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है।

वह सामर्थी दूतों के साथ ... आएगा। यीशु अकेला नहीं आएगा। स्वर्ग के दूत उसके साथ होंगे, और वे पूरी पृथ्वी का न्याय करने में उसकी सहायता करते हुए उसकी शक्ति के प्रकाश को फैलाएँगे (मत्ती 25:31–33)। स्वर्गदूतों का कार्य दूसरे स्तर पर होगा; वे प्रभु के सहायक के रूप में उसकी सेवा करेंगे।

वे *सामर्थी* दूत कहलाते हैं जो उनसे करने को कहा जाए वह करते हैं : वे प्रभु की सहायता अनन्त न्याय को आगे बढ़ाने में करेंगे। ये स्वर्गदूत मसीह की शक्ति को प्रगट करेंगे, और वे उसकी शान और ऐश्वर्य को दिखाएंगे। वे प्रभु की आज्ञा का पालन उस शक्ति के साथ फुर्ती से करेंगे जो प्रभु ने उन्हें दी है। अपनी सेवा को पूरा करने के लिये, वे उसकी अत्यन्त महिमा को प्रगट करेंगे।

वह धधकती आग में ... आएगा। उसका तेज और प्रताप आग के द्वारा भेजा जाएगा। हो सकता है कि वह आग में लिपटा होगा या आग के प्रचण्ड लपटों से घिर जाएगा।

वह अनन्त न्याय ... के रूप में आएगा। उसके आने का एक और उद्देश्य होगा कि वह उन लोगों से पलटा ले; जिन्होंने प्रभु के ज्ञान को ठुकरा दिया और उसके सुसमाचार की आज्ञाकारिता का अंगीकार किया।

यह ध्यान देना ज़रूरी है कि सुसमाचार जानकारी, कहानी या सलाह से बढ़कर है। इसमें आज्ञा की प्रकृति है। इसका पालन किया जाना है।

अधर्मियों का दण्ड प्रभु के आने का मुख्य उद्देश्य नहीं है। मुख्यतः वह अपने लोगों को लेने के लिये आएगा। जिन्होंने उसका अंगीकार किया उनका न्याय, मुख्य उद्देश्य अर्थात् बचाए गए लोगों के अनन्त छुटकारे के नीचे है। उसका आने से मसीह युग का अन्त होगा। उसका आना अनन्तता की ओर ले जाएगा। बाइबल तीन वाक्यांशों में सिमट जाएगा : "वह आने वाला है; वह आया था और वह फिर से आ रहा है।"

पौलुस थिस्सलुनीकियों से चाहता था कि मसीह के आगमन को पूरी स्पष्टता से देखें, और ऐसा चित्र उनके लिये प्रोत्साहन और शान्ति को लाएगा। हम उसके आगमन को किस दृष्टि के साथ देखते हैं? EC

आज्ञा मानने वाले का भविष्य (1:10)

आज्ञा न मानने वाले किन बातों का अनुभव करेंगे इसका वर्णन करने के बाद, पौलुस धर्मी जन के भविष्य का चित्रण करने लगा। छुटकारा पाए हुए लोगों के लिये द्वितीय आगमन किस प्रकार होगा?

वे परमेश्वर की महिमा करेंगे। यीशु अपने छुटकारा पाए हुए लोगों में महिमा पाने और आश्चर्य का कारण होने को आएगा और प्रशंसा को पाएगा; वह उन्हें अनन्त घर के लिये इकट्ठा करेगा। सम्बन्ध सूचक शब्द "में" क्रिया "महिमा पाने" का उपसर्ग है, जो क्रिया के बाद अकेला रह जाता है। दूसरे शब्दों में, पौलुस ने चकित करने वाला दावा किया कि प्रभु की महिमा पवित्र लोगों में दिखाई देगा (तुलना करें यूहन्ना 17:1; इफिसियों 2:7 से)।

वे प्रभु की महिमा में सहभागी होंगे। यीशु अपनी महिमा पवित्र लोगों के साथ बाँटेगा। हम प्रभु की महिमा को ग्रहण करेंगे, जिसका हमने पालन किया। दूसरी जगहों में, पौलुस ने उस महिमा के बारे में बताया जो मसीहियों में प्रगट की जाएगी (रोमियों 8:18; कुलुस्सियों 3:4; देखें 1 पतरस 4:13)। उसने देखा कि मसीही लोग पहले से ही प्रभु की महिमा में इस जीवन में सहभागी हैं, और जैसा कि मसीह के साथ उनके रिश्तों में मसीह की महिमा में बढ़ रहे हैं (2 कुरिन्थियों 3:15–18; 4:4–6)। उसके आने पर, वे लोग उससे भी बढ़ कर उसकी महिमा को पाएँगे।

वे उनके विश्वास के पूरा होने का अनुभव करेंगे। हमारा विश्वास अन्त या पूरा होने की ओर बढ़ना चाहता है। पौलुस की गवाही को ग्रहण किया गया, उसपर विश्वास किया गया और उसकी उस गवाही को उनके द्वारा अपनाना, उसके आने पर पूरा किया जाएगा।

वे अपने अनन्त घर में प्रवेश करेंगे। पौलुस ने इस आयत में युग के अन्त होने के बारे में कहा, परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य ने सदा अन्त की समाप्ति की

ओर देखा है।

अन्ततः मसीही लोग परमेश्वर की योजना का, तेजोमय अवसर का अनुभव करेंगे। यह जो कुछ परमेश्वर ने किया, इस घटना का विचार कर चुका था। हम स्वर्ग में, हमारे चारों ओर प्रकृति के वातावरण में, और हर मानव जाति में परमेश्वर की हस्तकला को देख चुके हैं, परन्तु हम कल्पना कर सकते हैं कि उसकी योजना की सारी बातें किस प्रकार पूरी होंगी? EC

आज्ञा न मानने वाले का प्रतिफल (1:8–10)

एक रेखा चित्र दिया गया कि मसीह के आने पर उन लोगों का क्या होगा जो मसीह की आज्ञा पर नहीं चलते। आज्ञा न मानने वालों में वे लोग हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते क्योंकि उन्होंने उसके इस ज्ञान को अपने चित्त से बाहर कर दिया और वे लोग जिन्होंने सुसमाचार को न मानने को चुना। ये लोग परमेश्वर के बदले की जलजलाहट का सामना करेंगे।

वे दण्ड पाएँगे। ये शब्द स्पष्ट हैं जो अनन्त हाय के बारे में बताते हैं। जिन्होंने मसीहियों को सताया, उनको वैसा ही मिलेगा जैसा उन्होंने दिया था। उन्होंने पीड़ाएं दीं; उसके आने पर वही उनको मिलेगा।

वे अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे। "अनन्त" के विषय पर उल्लेख किया जाना ज़रूरी है। यह परमेश्वर से सदा के लिये चलते रहने वाला अलगाव होगा। दण्ड का विवरण "विनाश" के रूप में दिया गया है। अस्तित्व के मिट जाने का विचार वह नहीं है जो दिए गए शब्द में प्रयोग किया गया है। वाक्यांश "अनन्त विनाश" केवल यहाँ नए नियम में वर्णित है, जो अनन्त जीवन का सीधा उल्टा है।

प्रभु की उपस्थिति से अलग होकर अनन्त विनाश को प्राप्त करेंगे। मनुष्य अनुमान नहीं लगा सकता कि प्रभु की उपस्थिति से और उसकी शक्ति के तेज से किस रीति से बाहर खदेड़ दिया जाएगा। धर्मी जन प्रभु की संगति में प्रवेश करेंगे, और अधर्मी जन संगति से सदा के लिये दूर कर दिए जाएँगे।

कुछ बन्दरगाह वर्ष भर काम करते हैं। और कुछ ठण्ड में बर्फ से ढके होते हैं। यह कहा जाता है कि मोन्टरियल और कनाडा जैसे बन्दरगाह में अधिकारी गण कप्तान से आग्रह करते हैं कि जब बर्फ के जमने का समय निकट आ जाए तो जहाज को बन्दरगाह से बाहर निकाल ले। यदि वह बहाने बनाता है, तो उसे छुट्टी नहीं मिल पाएगी। अवसर का लाभ उठाने से इनकार करके तब वह बच निकल सकता है, वह जिसके योग्य है वही उसे मिलता है। इसलिये, अनन्त विनाश दो सच्चाई को प्रगट करता है : परमेश्वर का धीरज सदा बना नहीं रहेगा, और मनुष्य के लिये पश्चाताप करने का अवसर सीमित है।[14]

परमेश्वर के पूरे वचन में इस प्रकार की धार्मिक विधि का कोई चित्रण नहीं है। क्रूस का चित्रण अत्यन्त भयावह है क्योंकि परमेश्वर से अनंतकाल का

अलगाव बहुत दुःखदायी है। अन्त समय में, परमेश्वर उन लोगों का अंगीकार करेगा जिन्होंने उद्धार के एकमात्र साधन, सुसमाचार का अंगीकार किया है। EC

एक दूसरे के लिये प्रार्थना (1:11, 12)

इस प्रकार का सोचना कैसा होगा कि आपने अपना सिर झुकाया हो और पौलुस के साथ प्रार्थना में सम्मिलित हुआ हो, उसे प्रार्थना की अगुवाई करते, सुना और प्रार्थना करते हुए देखा हो। यह कितने आदर की बात होती अगर ऐसा हुआ होता! दूसरी अच्छी बात यह जानना है कि जिस विषय के लिये प्रार्थना किया गया उसने उसके लिये क्या कहा।

इन दो आयतों में, उसने कहा, कि वह थिस्सलुनीकियों के लिये प्रार्थना कर रहा था। वह उनके लिये निरन्तर विशेष प्रार्थना किया करता था। चूँकि उनके लिये इस प्रार्थना को वह हमेशा करता था, इसलिये वह एक विशेष प्रार्थना बन चुका था। वह उनके लिये ऐसी याचना करता था जितना वह कर सकता था। निश्चित ही ये सच्ची प्रार्थनाएँ थीं, हमें भी इसी प्रकार की प्रार्थनाएँ एक दूसरे के लिये करनी चाहिए।

हमारे भाई लोग अपनी बुलाहट के योग्य ठहरें। पौलुस ने प्रार्थना किया कि परमेश्वर थिस्सलुनीकियों को उनके बुलाहट के अनुसार योग्य समझे, जिसे उन्होंने तब ग्रहण किया था जब वे मसीही बने थे। वे सुसमाचार के द्वारा उत्तम जीवन के लिये छुटकारा पाए हुए लोगों के रूप में बुलाए गए। पौलुस उनसे चाहता था कि वे अपने बुलाहट के साथ एकता में चलते हुए पाए जाएँ। अपने भाइयों के लिए हमारी प्रार्थना ऐसी ही होनी चाहिए।

हमारे भाइयों की विश्वास में आगे बढ़ने की विनती पूर्ण होगी। पौलुस ने प्रार्थना किया कि परमेश्वर उनके भलाई की हर एक इच्छा को पूरा करेगा। तात्पर्य परमेश्वर की भलाई के लिये नहीं परन्तु थिस्सलुनीकियों की भलाई के लिये है। उपवाक्य का अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है, "और भलाई करने के सभी भली उद्देश्य को पूरा करेगा।" वह चाहता था कि भलाई की हर एक इच्छा और विश्वास के हर एक काम का उत्तर परमेश्वर की शक्ति से मिलने पाए।

हम भलाई, विश्वास और परमेश्वर की शक्ति को एकसाथ परमेश्वर से इस पवित्र याचना में देखते हैं। इस प्रकार के निवेदन से कल्पना करते हैं कि परमेश्वर अपने ईश्वरीय उद्देश्यों को पूरा करने के लिये उनमें काम कर रहा है और वह अपने लोगों की प्रार्थनाओं का उत्तर सचमुच देता है।

मसीह उनके द्वारा महिमा पाए। पौलुस ने प्रार्थना की कि थिस्सलुनीकियों के द्वारा मसीह महिमा पाए और वे उसकी इस महिमा में सहभागी हों। "नाम"

वास्तव में, पूरे लोगों के लिये कहा गया है, ताकि प्रभु का "नाम" महिमा पाए, संसार को दिखाने के लिये कि प्रभु के लोग किस प्रकार होते हैं। पौलुस ने मसीह की महिमा को दो दिशाओं में जाते देखा – मसीही मसीह को महिमा दे रहे हैं, जबकि वे इसके बदले उसके लिये जीने के कारण उसकी महिमा में सहभागी हैं।

कितनी अर्थपूर्ण प्रार्थना है यह! इसके द्वारा आत्मिक जरूरतों : योग्य चाल चलन, मसीहियों की इच्छाएँ और महिमामय मसीह के आश्चर्य और उसकी महिमा में सहभागी होने की पूर्ति होती है। आइए, हम इसी प्रार्थना के समान अपने भाइयों के लिये प्रार्थना करें, आइए, हम अपने भाइयों से माँगे कि इसी प्रार्थना के समान वे हमारे लिये प्रार्थना करें। EC

संकट के समय में विश्वासयोग्यता (1:1–12)

मसीही बनने के बाद जब हम अपने पहले-पहले अनुभवों के बारे में दोबारा से सोचते हैं; अधिकांश रूप से, उत्साह, धन्यवादी, और अपने भाइयों का प्रेम हमारे पहले कुछ घण्टों और दिनों के प्रमुख हिस्सा हुआ करते थे। ये आशीषें बहुत आनन्द देने वाली थीं। अपने नए जीवन में आगे बढ़ने के लिये ये हमें प्रेरणा भी देते थे।

हो सकता है कि हममें से कुछ लोग चिन्तित हों कि दूसरे हमसे कैसा व्यवहार करेंगे, और हो सकता है कुछ ने उपहास और तिरस्कार का अनुभव किया हो। हमें उन नकारात्मक प्रभावों और निराशाओं का सामना करना सीखना था जिन्हें वे ला सकते थे। कुछ लोग अभी भी मसीह में अपने समर्पण के साथ इसी प्रकार की समान प्रतिक्रिया दिखाते होंगे।

"अधिक संकट," "अधिक विरोध" और "अधिक दुःख" थिस्सलुनीके के मसीहियों के अनुभवों की मुख्य बातें थीं (1 थिस्सलुनीकियों 1:6; 2:2, 14)। क्यों? क्योंकि अब शहर के दूसरे लोगों से उनका व्यवहार अलग हो गया था। अब इन मसीहियों के घरों में मूर्तियाँ नहीं पाई जाती थी। अब वे अन्यजाति पुरोहितों से सलाह नहीं माँगते थे। वे मंदिर के बलिदानों और धार्मिक जुलूसों में सम्मिलित नहीं होते थे। उनके पड़ोसी और हो सकता है उनके रिश्तेदार भी उनके सम्बन्धों, अधिकारों, और सौभाग्यों से वंचित करने का भय दिखाकर – यहाँ तक उनके साथ मारपीट कर उनके नए-नए विश्वास को नष्ट करने का प्रयत्न करते थे। इन नए चेलों के लिये मसीही स्वतंत्रता, समाज से बहिष्कृत जाति के रूप में मिलती थी – जिनके साथ परदेशी, दास या कोढ़ी (अछूत) के समान व्यवहार किया जाता था।

कुछ लोगों को मसीही होने के कारण अपमानित किया जाता है। परमेश्वर के मार्ग में चलने पर उनका उपहास और दुर्व्यवहार किया जाता है। जब कोई मसीही बनने के बारे में सोचता है, अलग कर दिए जाने का प्रश्न उसे चिन्तित।

करता इन परिस्थितियों में परमेश्वर इन लोगों को बलवन्त करने के लिये किस प्रकार का सहायता देता है? उनकी सहायता 2 थिस्सलुनीकियों के समान पत्री के द्वारा की जा सकती है। यहाँ पर परमेश्वर दुःख उठाने वाले मसीहियों को अपनी बुद्धि प्रदान करता है। यदि हम इन महत्वपूर्ण सच्चाइयों को सीख जाएँ जिन्हें परमेश्वर काम में लाता है, तो हम सब हमारे संघर्षों में बलवन्त होते जाएँगे।

परमेश्वर हमें अपनी सन्तान होने का अधिकार देगा (1:1–4)। परमेश्वर अपने बच्चों का मूल्य समझता है और मसीही चरित्र का उल्लेख करता है। जिन लोगों को अपने पड़ोसियों का साथ नहीं मिलता था और अब विरोधी समझे जाते थे, परमेश्वर और यीशु ने उन्हें "अनुग्रह" और "शान्ति" दी। स्वर्ग में उनके पिता और उनके उद्धारकर्ता उनकी परिस्थितियों को जानते थे और उनकी भलाई के लिये चिन्ता करते थे। उनके शिक्षकों का अभिवादन इस प्रेम और चिन्ता को प्रगट करते थे।

व्याकुल मन अपने लिये परमेश्वर के प्रेम के बारे में जानना चाहते हैं और उन्हें स्मरण कराया गया है उनके भाइयों के अभिवादन में : "परमेश्वर आपसे प्रेम करता है। परमेश्वर आपकी बड़ाई करता है। जो सबसे अच्छा हो, परमेश्वर आपके लिये वही चाहता है। पिता और पुत्र अपने हृदय में आपको चाहते हैं।" यह कितना प्रिय जान पड़ता है कि भाई और बहन दुःख उठा रहे पवित्र लोगों को प्रोत्साहित कर सकते हैं। हम इन विचारों को स्वयं के लिये भी सुनना चाहते हैं। परमेश्वर *आपसे* प्रेम करता है!

जो लोग कष्ट सहते हैं उन्हें भी भरोसा चाहिए कि परमेश्वर उनके मसीही चरित्र का मूल्य समझता है। प्रेम और विश्वासयोग्यता सच्चे मोल हैं, धन-सम्पत्ति और शारीरिक जीवन से भी बढ़कर मूल्यवान हैं। बढ़ता हुआ प्रेम और विश्वासयोग्यता भक्तिहीनों के उपद्रव और अधिक समय तक चलने वाले अपमान को भी सह लेता है। ये गुण हमें कठिन परिस्थितियों में धर्मी बने रहने में हमारी सहायता करते हैं।

परमेश्वर हमारे सताने वालों से लेखा लेगा (1:5–10)। जो लोग दुःख उठाते हैं उन्हें अवश्य पूछना चाहिए, "धर्मी क्यों दुःख उठाते हैं और अधर्मी क्यों नहीं उठाते हैं?" अय्यूब के लिये यह एक पहेली थी (अय्यूब 21:7–16)। भजनकार प्रायः परमेश्वर के न्याय को समझने का प्रयत्न किया करते थे (देखें भजन संहिता 13:1; 22:1–5; 73:16)। मसीही आज इससे संघर्ष करते हैं। अन्याय दूसरों पर क्रोध करने और परमेश्वर को छोड़ देने का कारण बन सकता है! इसलिये, इस मामले को सावधानीपूर्वक जाँच लेना चाहिए।

जैसा कि इस समस्या पर हम परमेश्वर के दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करते हैं, हम अध्याय 1 में समझाई गई दो सच्चाइयों पर भरोसा कर सकते हैं। पहला, परमेश्वर सतानेवालों से लेखा लेगा और न्याय प्रदान करेगा। जिन्होंने

परमेश्वर के मार्ग को नहीं ग्रहण किया उन्हें दण्ड दिया जाएगा। इसमें वे लोग आते हैं जो परमेश्वर के लोगों को सताते हैं।

परमेश्वर का न्याय उन पर आ पड़ेगा जो अपश्चतापी सताव करनेवाले हैं। परमेश्वर के पास उन्हें अलग करने और दण्ड देने की शक्ति है। उन्होंने उसका विरोध करना चुना, परिणामस्वरूप परमेश्वर की आशीषों के बिना अनंतकाल का प्रतिफल मिला। यीशु, एकमात्र उद्धारकर्ता का त्याग करने से उन्होंने उसके उद्धार का त्याग कर दिया। इस प्रकार, उन्होंने परमेश्वर से अलगाव और उसकी क्षमा के बदले आशीषों को चुना।

दूसरा, जिन्होंने दुःख उठाया परमेश्वर उन्हें विश्राम/चैन देगा। उनके लिये, बुरे व्यवहार से विश्राम उतना ही निश्चित है जितना उनके उपद्रव करनेवाले के लिये दण्ड। उसके पास अपने बच्चों को अनन्तता की आशीष देने की शक्ति है। उस पर जिनका भरोसा है उनकी पहुँच उसके महान शक्ति – पाप से उद्धार की और अनंतकाल के लिये उसके आशीषों की शक्ति तक होती है। हमारी पहुँच उसकी शान्ति और हमारे लिये उसकी चिन्ता अब से अन्त न होने वाले समय तक होगी! कितना अद्‌भुत चैन है, उनके लिये जिनका यीशु मसीह में उनके विश्वास रखने के कारण अपमान किया जा रहा है!

परमेश्वर अपने सेवा कार्य के लिये हमें तैयार करता है (1:11,12)। परमेश्वर की सहायता से सताए गए पवित्र लोग परिपूर्णता का जीवन जी सकते हैं। परमेश्वर उन वस्तुओं की पूर्ति करेगा जो उसकी सेवा के लिये और भलाई और विश्वासयोग्यता को हमारे प्रतिदिन के जीवन में दर्शाने के लिये आवश्यक है। हमारे पास शक्ति है – परमेश्वर की शक्ति। जब हम सताव का सामना करते हैं तब उसकी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिये वह हमारी सहायता करेगा।

हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम इसलिये बचाए गए हैं क्योंकि हम परमेश्वर के सेवक हैं। उसके अनुग्रह और आशीषें जो इससे आती हैं हम धन्यवादी हैं, जो हमें परमेश्वर के द्वारा प्रयोग किए जाने के लिये और उसके मार्ग में उसके कार्य को हमारे जीवन में प्रगट करने के लिए तैयार करते हैं। पौलुस ने इफिसियों को स्मरण कराया कि "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया" (इफिसियों 2:8–10)। क्योंकि यदि ऐसा है तो उसी प्रकार "तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें" (मत्ती 5:16)।

परिणाम क्या होगा? लोग यीशु को हममें देखेंगे। वे देखेंगे कि परमेश्वर

किस रीति से व्यवहार करेगा और यीशु में उनके व्यवहार को जब क्लेश होने पर भी मसीही भक्ति का जीवन बिताते हैं। यह यीशु के लिये आदर और महिमा की बात होगी।

उपसंहार। मसीही जीवन एक वापस बदलाव का जीवन है। एक व्यक्ति जो शैतान की सेवा कर रहा होता है आज्ञा पालन के साथ परमेश्वर की ओर मुड़ जाता है और उसे क्षमा मिल जाती है। यीशु का आना बड़े बदलाव को भी लाता है। शान्ति से जीने वाले लोग कष्ट सहेंगे और कष्ट सहने वाले लोग शान्ति पाएँगे। केवल वे लोग जो परमेश्वर की ओर हैं दिखाएंगे कि उन्होंने महत्वपूर्ण जीवन जीया है।

कष्ट सहने वाले पवित्र लोगों के लिए कितना महान सन्देश है! हमारे साथ बुरा व्यवहार किया गया क्योंकि हम यीशु के पीछे चलते हैं, हमें स्मरण रखना चाहिए कि यह अत्यधिक आदर की बात है। इसका मूल्य पुरस्कार और उपहार से बढ़ कर है, शैक्षणिक उपाधियों और सम्मान पत्रों से बढ़कर है, हमारे नाम जो लिखे जाते या रोशनी में जगमगाते हैं से बढ़कर है। हम सृष्टि कर्ता प्रभु के महिमा और आदर में सहभागी हैं।

यद्यपि हमारे सही होने पर भी, जब हम दुःख उठाते हैं, तब परमेश्वर हमें शान्ति देता है। जो अन्याय पूर्वक क्लेश सहते हैं, जब हम उनकी सहायता करते हैं तब हम यह शान्ति उन्हें भी दे सकते हैं। विषम परिस्थितियों में भी, अब हम उपयोगी जीवन जी सकते हैं, यह जानकर कि हमारे पास अनंतकाल के लिये आदरपूर्ण जीवन होगा! TP

समाप्ति नोट्स

[1]ए. टी. रॉबर्टसन, *दि एपिसल्स ऑफ़ पौल*, वोल. 4, *वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टैस्टमन्ट* (नैशविले : ब्रॉडमेन प्रेस, 1931), 41. [2]सी. एफ. हॉग एण्ड डब्ल्यू. ई. वाईन, *दि एपिसल ऑफ़ पौल दि अपोस्टल टू द थिस्सलोनियन्स* (श्रेवपोर्ट, ला. : लम्बेर्ट पब्लिशिंग कं., 1977), 218. [3]*दि एक्स्पोसिटर'स बाइबल कमेन्टरी*, एड. फ्रैंक इ. गैबेलेईन (ग्रान्ड रैपिड्स, मिशिगन : जोंडरवन, 1978), 11:309 में रॉबर्ट एल. थॉमस, "2 थिस्सलोनियन्स।" [4]एफ. एफ. ब्रूस, *1 एण्ड 2 थिस्सलोनियन्स*, वर्ड बिब्लिकल कमेंटरी, वोल. 45 (वाको, टेक्स. : वर्ड बुक्स, 1982), 149. [5]डेविड जे. विलियम्स, *1 एण्ड 2 थिस्सलोनियन्स*, न्यू इन्टरनैशनल बिब्लिकल कमेन्टरी : न्यू टैस्टमन्ट सीरीज, वोल. 12 (पीबॉडी, मैसाचुसेट्स : हेंड्रिकसन पब्लिशर्स, 1992), 113–14. [6]थॉमस, 312. [7]हॉग एण्ड वाईन, 231. [8]रॉबर्टसन, 44. [9]जे. इ. फ्रेम, *अ क्रिटिकल एण्ड एक्सिजिटिकल कमेन्टरी ऑन दि एपिसल्स ऑफ़ सेंट पॉल टू द थिस्सलोनियन्स*, दि इन्टरनैशनल क्रिटिकल कमेन्टरी (न्यू योर्क : चार्ल्स स्क्रिबनेर्'स संस, 1912; रीप्रिंट, एडिनबर्ग : टी. & टी. क्लार्क, 1988), 234. [10]मारविन आर. विन्सेन्ट, *वर्ड स्टडीस इन द न्यू टैस्टमन्ट* (ग्रान्ड रैपिड्स, मिशिगन : विलियम बी. ईर्द्मैंस पब्लिशिंग क., 1946), 4:61.

[11]विलियम्स, 117. [12]रॉबर्टसन, 46. [13]जॉर्ज मैकडोनाल्ड, *अनस्पोकेन सरमन्स*, सीरीज वन, "द हैंड्स ऑफ़ द फादर" (http://www.johannesen.com/SermonsSeries1.htm);

Internet; accessed 22 May 2008. [14]रोनाल्ड ए. वार्ड, *1 एण्ड 2 थिस्सलोनियन्स* (वाको, टेक्स. : वर्ड बुक्स, 1973), 147.